Haroon Aal Rashidh
समाज विकासमाला
हारूं-अल-रशीद
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ६१

हारूं-अल-रशीद

एक आदर्श खलीफ़ा की कहानी

लेखक
विष्णु प्रभाकर
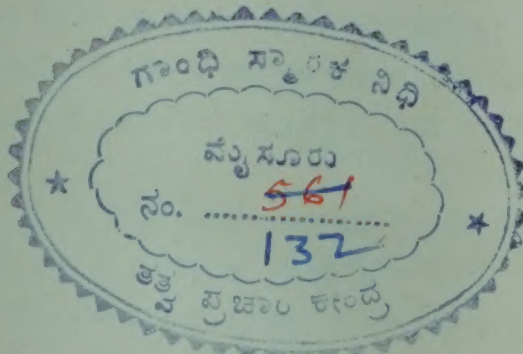
सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

प्रथम बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

दूध का दूध, पानी का पानी करने के लिए जिनका नाम बड़े आदर से लिया जाता है, उनमें ख़लीफा हारूं-अल-रशीद का अपना स्थान है। वह इतने ईमानदार थे कि हर चीज़ को न्याय की तराज़ू पर तौलकर सही फैसला करते थे। फैसला करते समय वह यह नहीं देखते थे कि जिसको दंड मिल रहा है वह कौन है? भले ही अपराधी उनका लड़का हो या नज़दीक का संबंधी या मित्र, कसूरवार होने पर सज़ा मिलती ही थी।

उनके जीवन की बहुत-सी घटनाएं दिल पर गहरा असर करती हैं। उनमें से कुछ चुनी हुई घटनाएं इस पुस्तक में दी गई हैं।

आशा है, पाठक इस पुस्तक को पढ़कर शिक्षा ग्रहण करेंगे।

—सम्पादक

हारूं-अल-रशीद

: १ :

बहुत दिनों की बात है। एक हजार साल से भी पुरानी। बगदाद शहर में एक सौदागर रहता था। उसका नाम था अली। एक बार वह हज करने चला। उसके पास कुछ धन था। उस धन को उसने एक बर-तन में भरा और ऊपर से जैतून का तेल डाल दिया। फिर उस बरतन को लेकर वह अपने एक मित्र के पास गया। बोला, "मैं हज करने जा रहा हूं। यह बरतन तुम रख लो। लौटने पर ले लूंगा।"

मित्र ने कहा, "जहां जी चाहे रख जाओ।"

बरतन रखकर अली चला गया।

धीरे-धीरे कई साल बीत गये। अली न लौटा। हज करने के बाद वह दूसरे देशों की सैर करने चला गया। इधर उसका मित्र सोच में पड़ गया। एक दिन वह खाना खा रहा था, कहने लगा, "जैतून का तेल बहुत अच्छा होता है।" यह सुनकर उसकी बीवी बोली, "अच्छा होता है तो किसी दिन खिलाओ न ?" मित्र ने कहा, "अभी लो। अली मेरे पास जैतून का तेल रख गया है। उसी-में से थोड़ा-सा ले आता हूं।" बीवी एकदम बोली, "नहीं-

नहीं ऐसा न करिए। किसीकी धरोहर को नहीं छूना चाहिए।"

मित्र तब तो चुप होगया, लेकिन बाद में किसी समय उसने अली के बरतन को खोला। तेल चखनें के लिए उसमें उंगली डाली तो देखता क्या है कि तेल के नीचे अशरफियां हैं। "अशरफियां !" उसके मुंह में पानी भर आया। लालच ने उसे जकड़ लिया।

अशरफियाँ देखकर उसके मुंह में पानी भर आया।

उसने अशरफियां निकाल लीं और बरतन में तेल भर दिया।

कुछ दिन बाद अली लौट आया। लौटने के दूसरे दिन ही वह अपना बरतन ले गया। घर जाकर उसे

खोला। देखा कि उसमें अशरफियां नहीं हैं। तेल-ही-तेल है। उसने मित्र से पूछा, लेकिन वह कब माननेवाला था! वह तो और नाराज़ होगया। फिर तो बातों-बातों में बात बढ़ गई। अली खलीफा के दरबार में पहुंचा। खलीफा ने सारी कहानी सुन ली, लेकिन उसकी समझ में कुछ न आया। वह अपने इंसाफ के लिए मशहूर था। दूध का दूध और पानी का पानी कर देता था। इसलिए उसने अली को दूसरे दिन आने के लिए कहा।

रात आई। सदा की भांति खलीफा भेस बदलकर घूमने के लिए निकला। वह कुछ दुखी था। अली की बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। इसी सोच-विचार में फंसा घूम रहा था कि उसने देखा, चांदनी रात में कुछ बालक खेल रहे हैं। वह उनके पास गया। बड़ा हैरान हुआ। वे बालक अली के मुकदमे का खेल खेल रहे थे। बस, वहीं वह खड़ा होगया और उस खेल को देखने लगा। एक बालक जज बना हुआ था, दूसरा अली, तीसरा अली का मित्र। अली ने कहा, "मेरे बरतन में अशरफियां भरी हुई थीं।" मित्र बोला, "नहीं, उसमें जैतून का तेल था। आज भी उसमें जैतून का ही तेल है।" जज कुछ सोचने लगा। फिर बोला, "हम बरतन देखना चाहते हैं। और हां, बाजार से दो तेल बेचनेवालों को भी बुलवालो।"

ऐसा ही किया गया। बरतन में ऊपर तक जैतून

का तेल भरा हुआ था। जज ने तेल बेचनेवालों से पूछा, "जैतून का तेल कितने दिन तक ठीक रह सकता है ?" तेल बेचनेवालों ने कहा, "तीन साल तक।" जज ने बरतन में से तेल निकाला, पूछा, "बता सकते हो कि यह तेल कितने साल का होगा ?" दोनों तेल बेचनेवालों ने उसे चखा और कहा, "यह तेल तो एक साल का हो सकता है।"
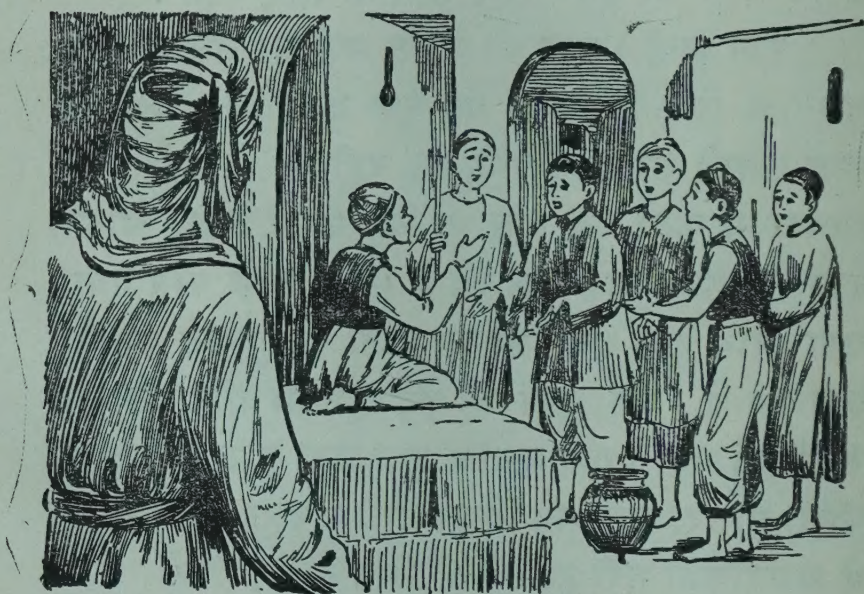
बच्चों ने समस्या सुलझा दी

बस बात साफ होगई। बरतन में सात साल पुराना तेल नहीं था। नया तेल था। नया क्यों भरा गया ? क्योंकि उसमें से अशरफियां निकाल ली गई थीं। अली का मित्र पकड़ा गया। उसको अपना कसूर मानना पड़ा।

जज ने उसको फांसी की सजा दी।

खलीफा यह देखकर बहुत खुश हुआ, बहुत खुश हुआ। खुशी-खुशी घर लौटा। अगले दिन उसने उन बालकों को दरबार में बुलाया और अली का मुकदमा उनके सामने पेश किया। बालक तनिक भी नहीं झिझके वैसा ही किया, जैसा रात किया था। कहना न होगा कि अली को अशरफियां वापस मिल गईं। खलीफा ने उस धोखेबाज मित्र को बड़ी कड़ी सजा दी। और हां, उन बालकों को उसने बहुत-सा धन इनाम में दिया।

: २ :

यह कहानी खलीफा हारूं-अल-रशीद की है। आज से कोई बारह सौ साल पहले वह बगदाद में राज करता था। अलिफ-लैला की कहानियों में उसका बहुत नाम आता है। बड़ी शान थी उसकी। उसके दरबार में बड़े-बड़े महाराजों के राजदूत रहते थे। बड़े-बड़े कवि, पहुंचे हुए संत, और नामी कलाकार, सभी उसके पास आते थे। सभी का वह आदर करता था। उसके समय में खिलाफत की धाक जमी हुई थी। पहले जैसी सादगी तो अब नहीं रही थी, लेकिन फिर भी अपने इंसाफ के लिए वह दुनियाभर में मशहूर था। आजतक है। उसका दिल बहुत बड़ा था। वह दूसरों की बात समझने की कोशिश करता था। अपनी रिआया से उसे बहुत प्यार था। वह रात को भेस बदलकर घूमा करता

था। भेद-भाव तो उसे छू तक नहीं गया था। अपने बेटों तक को वह माफ नहीं करता था।

एक बार उसने अपने बेटे को कोई बुरा काम करते हुए देख लिया। फौरन उसको कैद में डाल दिया। फिर काजी को बुला भेजा। काजी अबू यूसुब उस काल के माने हुए जज थे। उन्होंने सारी कहानी सुनी, बोले, "इस नौजवान को सजा नहीं दी जा सकती?"

खलीफा ने पूछा, "क्यों? मैंने इसे अपनी आंखों से कसूर करते देखा है। इसके कोड़े लगने चाहिए।"

काजी बोले, "जरूर लगने चाहिए, लेकिन कसूर तो साबित हो। आपका गवाह कौन है?"

खलीफा ने अपने लड़के के साथ भी रियायत न की

खलीफा ने जवाब दिया, "गवाह तो कोई नहीं है।"

काजी ने कहा, "गवाह नहीं है तो कसूर साबित नहीं होता। आप देखने में गलती कर सकते हैं। देखना जानने से बढ़कर नहीं है।"

खलीफा कुछ जवाब न दे सके। नौजवान को छोड़ दिया गया। काजी को अब पता लगा कि वह नौजवान खलीफा का बेटा था। खलीफा को बेटे के बच जाने पर खुशी तो हुई, लेकिन वह उसे छुड़वाना चाहते नहीं थे। चाहते तो केद क्यों करते? देखकर अनदेखा कर देते। गवाह कौन था? मगर तब इंसाफ न होता। इसी इंसाफ के लिए तो आजतक उसका नाम मशहूर है।

खलीफा हारूं-अल-रशीद अब्बासी-वंश के थे। उनसे पहले उमैया-वंश के खलीफा राज करते थे। दोनों एक-दूसरे को फूटी आंखों से नहीं देख सकते थे। एक-दूसरे से नफरत करते थे। एक-दूसरे की जान लेने को तैयार रहते थे। एक बार हारूं-अल-रशीद को पता लगा कि दमिश्क में एक उमवी[1] सरदार रहता है। उसके पास खूब सारी दौलत है। उसका लोग बड़ा आदर करते है। उसके इशारे पर कुछ भी कर सकते हैं। वह चाहे तो फिर उमैयावंश का राज हो सकता है।

यह कहानी सुनकर खलीफा डर गया। उसने

१ उमैया वंश के लोग 'उमवी' कहलाते थे।

फौरन अपने दूत को दमिश्क भेजा। आज्ञा दी, "तेरह दिन के भीतर उस उमवी को कैद करके मेरे सामने लाओ।" वहां के हाकिम को उसने लिखा, "अगर उमवी कुछ गड़बड़ करे तो दूत की मदद करो और उसके घर-बार पर निगरानी रखो।"

दूत कई दिन बाद दमिश्क पहुंचा। खलीफा ने जैसा सुना था, उससे कहीं अधिक शान उमवी की थी। दूत हैरान रह गया। उसके साथ केवल पांच साथी थे। उमवी बेटों और दासों से घिरा था। उसने कुछ गड़-बड़ी की तो क्या होगा? लेकिन उमवी ने कुछ गड़बड़ नहीं की। वह निडर होकर दूत से मिला। उसने खलीफा की कुशल पूछी। वह तब खाना खाने जा रहा था। उसने दूत से भी खाना खाने के लिए कहा, लेकिन दूत नहीं माना।

खाना खाने के बाद उमवी ने पूछा, "खलीफा ने आपको किसलिए भेजा है?" दूत ने चुपचाप खलीफा का परवाना उमवी को दे दिया। उसने पढ़ा और समझा। लेकिन उसके चेहरे पर कोई तबदीली नहीं हुई। उसने अपने बेटों, साथियों और दासों को बुलाया। कहा, "मुझे खलीफा ने बुलाया है। मैं जा रहा हूं, लेकिन तुम किसी तरह की गड़बड़ी न करना। मेरा परवाना आने तक आराम से रहना। औरतों से कह देना कि फिकर न करें। मेरे साथ कोई नहीं जायगा।"

इस तरह सबको समझा-बुझाकर उसने अपने पैर आगे बढ़ा दिये। उनमें बेड़ियां डाल दी गईं। दूत ने उसे ऊंट पर सवार कराया और चल पड़ा। राह में उमवी के बाग और खेत पड़ते थे। वह दूत को उनके बारे में बताता रहा। दूत को यह सब अच्छा नहीं लगा। उसने कहा, "खलीफा के कैदी होकर तुम इस निडरता से बातें करते हो!" उमवी हँस पड़ा, "मैंने कोई कसूर नहीं किया है, फिर मैं क्यों डरूं! खलीफा मेरी बातें जानकर मेरा आदर करेंगे और अगर वह मुझे मरवा देंगे तो फिर समझ लो कि खुदा ने मेरी तकदीर में ऐसा ही लिखा होगा। हर हालत में मुझे दुखी नहीं होना चाहिए।"

इतना कहकर वह चुप हो गया, फिर नहीं बोला। खलीफा के दरबार में पहुंचकर दूत ने सब बातें उनसे कहीं। सुनकर खलीफा हैरान रह गया--या खुदा! यह उमवी तो सच्चा और वफादार है। इसके बारे में लोगों ने झूठी बातें कही हैं। उसने कहा, "फौरन बेड़ियां काटकर उसे मेरे पास लाओ।"

उमवी जब उसके सामने आया तो खलीफा ने बड़े आदर से उसे बैठाया। बड़े प्यार से बातें कीं। पूछा, "कुछ चाहिए तो मुझसे कहो।"

उमवी ने जवाब दिया, "मुझे मेरे बाल-बच्चों के पास भेज दो। आपके राज में मुझे और मेरे शहर-

वालों को सबकुछ मिला हुआ है ।"

कहना न होगा कि खलीफा ने उसे बेशुमार इनाम दिये। दूत से कहा, "इनको बड़े आदर के साथ वापस छोड़कर आओ।"

: ३ :

उस काल में अपने विरोधियों को मार डालना एक मामूली बात थी, लेकिन हारूं-अल-रशीद अपने विरोधी का आदर भी करना जानता था। उसके सीने में दिल जो था--एक बड़ा दिल !

वरामिका-वंश के लोगों से खलीफा का बहुत प्यार था। खलीफा बनने के बाद उसने उनके नेता यहिया को अपना बड़ा वजीर बनाया था। बाद में यहिया का बेटा जाफर वजीर बना। वह बहुत ही चतुर और काबिल था। उसने राज को कहीं-से-कहीं पहुंचा दिया। खलीफा उसको बहुत चाहते थे। बराबर अपने साथ रखते थे। अलग होना गवारा नहीं कर सकते थे। इसीलिए धीरे-धीरे जाफर की ताकत और शान-शौकत बढ़ती चली गई। एक दिन इतनी बढ़ गई कि खलीफा भी उससे डरने लगा। राजनीति में ऐसा होना ही है। उसके विरोधियों ने खलीफा के कान भरने शुरू कर दिये थे। नतीजा यह हुआ कि एक दिन खलीफा ने जाफर को मरवा डाला। यहिया और उसके दूसरे बेटे फजल को जेल में डाल दिया। कई साल बाद दोनों वहीं मर

गये। खलीफा उनसे बहुत नाराज होगया था, यहां तक कि उसने अपने राजभर में एलान करवा दिया--"कोई भी उनके लिए शोक न मनाये। उनकी याद में मरसिया न पढ़े। जो ऐसा करेगा उसे कड़ी सजा दी जायगी।"

एक तरफ तो इतनी कठोरता थी, दूसरी तरफ वह खुद उनकी याद में ज़ार-ज़ार रोता था! वह उनको प्यार जो करता था। लेकिन राजनीति में प्यार की कुछ कीमत नहीं होती। शायद जाफर की बन जाती तो वह खलीफा को मार डालता।

एक दिन की बात है। रात का समय था। पहरेदार बरामिका-वंश के लोगों के मकान के पास से गुजर रहे थे। सहसा उन्होंने एक आदमी को देखा। उसके हाथ में एक कागज था। उसमें उन लोगों के लिए मरसिये लिखे हुये थे। वह मरसियों को पढ़ता और रोता जाता। पहरेदारों ने फौरन उसको पकड़ लिया और खलीफा के दरबार में ले गये। खलीफा ने पूछा, "मेरे मना करने पर भी तुम ऐसा काम क्यों कर रहे थे? मैं तुमको कड़ी सजा दूँगा।" वह आदमी घबराया नहीं, बोला, "अमीरुल-मोमनीन, आप मेरी कहानी सुन लीजिए, उसके बाद जो आप चाहें सजा दीजिए।"

"सुनाओ"--खलीफा ने कहा। वह बोला, "मैं उन लोगों का एक छोटा-सा नौकर था। एक दिन

वजीरे-आजम ने मुझसे कहा, "तुम किसी रोज मेरी दावत करो।" मैंने कहा, "कहां आप और कहां मैं ! मेरा तो मकान भी आपके काबिल नहीं है। आप मेहरबानी करके मुझे एक साल की मोहलत दीजिए।" वजीरे-आजम ने मुझे कुछ महीने की मोहलत दी। जब मैं तैयारी कर चुका तो यहिया अपने दोनों बेटों और कुछ दासों के साथ मेरे घर आया। आते ही बोला, "भूखा हूं, मेरे लिए खाना लाओ।" जो कुछ तैयार था, मैंने फौरन उनके सामने हाजिर कर दिया। खा-पीकर वह वहीं टहलने लगे। मुझसे कहा, "मुझे अपना सब मकान दिखाओ।" मैंने कहा, "मेरा तो यहीं मकान है और यह आपके सामने है।" इस पर उसने कहा, "तुम्हारा एक मकान और भी है।" यह कहकर उसने कुछ मेमारों को बुलाकर उनसे कहा, "पड़ोस के मकान की लगती हुई दीवार को तोड़कर एक दरवाजा बना दो।" ऐसा ही किया गया। उस तरफ एक बहुत बड़ा बाग था। वह बहुत शानदार था, फल-फूलों से लदा हुआ। सजे हुए बढ़िया-बढ़िया मकान थे। देखकर आंखें झपकती थीं। कीमती सामान के अलावा बहुत से नौकर-चाकर भी थे। उसने कहा, "यह तुम्हारा मकान है।" यही नहीं, नौकर-चाकर और गुलामों के खर्च के लिए उसने जाफर से मुझे एक जागीर दिलवाई। फजल से नगद दस हजार दीनारें दिलवाईं।

"अमीरुल-मोमनीन, उस आदमी ने मेरे लिए इतना कुछ किया। क्या मैं उसकी याद में दो आंसू भी नहीं बहा सकता ? यदि आप इस बात के लिए मुझे मौत की सजा देना चाहें तो दे सकते हैं।"

इतना कहकर उस आदमी ने अपना सिर ऊपर उठाया। देखता क्या है, खलीफा की आंखों से आंसू बह रहे हैं। वह चकित-भौंचक देखता ही रह गया। खलीफा ने उसे छोड़ दिया। यही नहीं, उसने अपनी आज्ञा भी वापस ले ली। अब जो चाहे उन लोगों के लिए मरसिया कह या पढ़ सकता था। उनकी याद में आंसू बहा सकता था।

दूसरे के दुःख और पीड़ा की बात सुनकर उसकी आंखों में आंसू आ जाते हों, केवल यही बात नहीं थी। अपनी बुराई सुनकर भी वह रो पड़ता था। एक बार की बात है। सभा जुड़ी हुई थी। आनंद मनाया जा रहा था। उस समय का मशहूर शायर अबुल अताहिया भी वहां मौजूद था। खलीफा ने उससे कहा, "यह खुशी का मौका है, कुछ सुनाओ।" शायर ने पहला शेर पढ़ा। उसका मतलब था, "खुदा करे, तेरा जीवन और खुशी के साथ बसर होता रहे।" खलीफा बहुत खुश हुआ। शायर ने दूसरा शेर पढ़ा, "दुआ है कि तेरी छोटी-से-छोटी चाह को खुदा तेरे सोचने से पहले पूरी कर दिया करे।" खलीफा और भी खुश हुआ।

शायर ने फिर तीसरा शेर पढ़ा, जिसका मतलब था, लेकिन जब मौत तेरे पास आये, तुझको सांस लेने में कठिनाई हो तो तुझको उस वक्त मालूम हो कि यह तमाम दुनिया धोखे की टट्टी है।

न जाने क्या हुआ, खलीफा की आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। यह देखकर उसके वजीर ने शायर से शिकायत की—तुमको इसलिए बुलाया था कि शायरी सुनाकर तुम खलीफा को खुश करो, लेकिन तुमने तो उनको रुला दिया! खलीफा ने एकदम उसको टोका—इसको कुछ न कहो। इसको यह मालूम हुआ कि हम अंधे हो रहे हैं। इसका दिल नहीं चाहता कि हम और भी अंधे हों। इसलिए इसने हमको आगाह कर दिया है।"

: ४ :

खलीफा का पद बहुत बड़ा था। वह राजा भी था और पोप (धर्मगुरु) भी। फिर भी लोग उससे कड़ी-से-कड़ी बातें कर लेते थे। कड़े-से-कड़े जवाब देते थे। एक बार वह हज करने मक्का-शरीफ गया। वहां काबा-शरीफ की परिक्रम्मा की जाती है। खलीफा सबसे आगे था। उसके रहते कौन आगे रह सकता था। लेकिन जैसे ही वह आगे बढ़ा, एक अरब एकाएक उससे भी आगे बढ़ गया। सब हैरान हो उठे। इशारा पाकर कुछ लोगों ने उस बहादुर अरब को

रोका। उसने जवाब दिया, "इस जगह सब बराबर हैं। खलीफा भी, जनता भी। लिखा है—इस पाक जगह को हमने सब लोगों के लिए यकसां (एक समान) बनाया है। चाहे कोई इसमें रहने वाला हो, चाहे अजनबी मुसाफिर हो। जो इस जगह बेअदबी करेगा, उसको हम दुःख देंगे।"

जब खलीफा ने यह सुना तो अपने आदमियों से कहा, "इस आदमी को जाने दो।"

लेकिन बात यहीं नहीं रुक गई। जहां-जहां भी अवसर आया, वह अरब खलीफा से आगे रहा। वहां एक खास जगह है, जहां विशेष रूप से नमाज पढ़ी जाती है। वहां भी उस अरब ने खलीफा से पहले नमाज पढ़ ली। खलीफा कुछ नहीं बोला। धीरे-धीरे काम सब पूरे हुए। तब उसने उस अरब को अपने पास बुला भेजा। उसने जवाब दिया, "मुझे खलीफा से मिलने की कोई जरूरत नहीं है। अगर वह मिलना चाहता है तो मेरे पास आवे।"

यह जवाब सुनकर खलीफा अपने आप उसके पास पहुंचा। सलाम करने के बाद पूछा, "क्या मैं बैठ सकता हूं?"

अरब ने जवाब दिया, "यह मेरा मकान नहीं है। यह जगह मेरे मुल्क में भी नहीं है। हम और तुम यहां बराबर हैं। मन चाहे तो बैठ जाओ। न मन चाहे तो

चले आओ।"

खलीफा बैठ गया और बोला, "मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं।"

अरब ने कहा, "तुम जो पूछना चाहते हो वह सीखने के लिए है या मुझे हैरान करने के लिए?"

खलीफा ने जवाब दिया, "मैं सीखने के लिए पूछ रहा हूं।"

अरब ने कहा, "तो जिस तरह चेला गुरु के सामने बैठता है तुम भी उसी तरह अदब से बैठो।"

खलीफा ने ऐसा ही किया। उसके बाद उसने कई बातें पूछीं। अरब ने सब बातों का खुलकर जवाब दिया। न झिझका, न डरा, यहांतक कि एक बार उसने खलीफा को केवल 'हारूं'" कहकर पुकारा। इस पर खलीफा लाल-पीला हो उठा। अरब को धमकाने लगा। वह इतना नाराज हुआ कि एक साथी बीच-बचाव करने दौड़ा। कहने लगा, "यहां नाराज नहीं होना चाहिए। इस अरब को माफ कर दीजिए।"

लेकिन अरब हँसता ही रहा। बोला, "मैं नहीं जानता, तुम दोनों में कौन अधिक बेवकूफ है। वह जो तकदीर में लिखी बात को माफ करने को कहता है या वह, जो उस बात को करना चाहता है, जो तकदीर में नहीं है।"

दोनों उसे देखते ही रह गये।

उसके बाद उसने खलीफा के सवालों का जवाब देना शुरू किया। बाद में उसने खलीफा से भी एक

लेकिन अरब हँसता ही रहा।

सवाल पूछा। खलीफा जवाब न दे सका, लेकिन वह अरब से बहुत खुश हुआ। उसे बहुत-सा धन इनाम में देना चाहा, लेकिन उसने लेने से इंकार कर दिया। खलीफा ने दूसरा सामान देना चाहा। उसने वह भी नहीं लिया। कहा, "नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए। जो तुमको यह सब देता है, वही मुझको भी देता है।"

खलीफा ने पूछा, "तुमको किसीका कुछ देना तो नहीं ?"

अरब ने जवाब दिया, "मुझे किसीका कुछ नहीं देना।"

इस तरह उस अरब ने खलीफा को हर तरह से हरा दिया। उसके दिल में घर कर लिया। यह भेंट हो चुकने के बाद खलीफा को पता लगा कि वह बहादुर और आलिम अरब हजरत अली के वंश का है।

कुछ भी हो, वह लोगों को समझने की कोशिश करता था। जो चतुर थे, आलिम थे, लायक थे, उनका वह आदर करता था। लोगों की पहुंच से वह बाहर नहीं था। वह उनको प्यार करता था। मुसलमानों को ही नहीं, ईसाइयों को भी प्यार करता था। एक बार वह शिकार के लिए गया। बहुत देर होगई। साथियों से बिछुड़कर वह आगे निकल गया। उसका एक साथी बहुत थक गया था। पास ईसाइयों की एक दरगाह थी। वह वहीं चला गया। वहां एक बूढ़ा ईसाई रहता था। वह खलीफा के साथी को अंदर ले गया। उसकी बढ़ी आवभगत की, खाना खिलाया और सब तरह से आराम पहुंचाया। साथी बहुत खुश हुआ। रात को जब खलीफा के पास लौटा तो ईसाई की बड़ी तारीफ की। बस फिर तो खलीफा भी रुक गया। दूसरे दिन दरगाह में पहुंचा, सारे दिन वहीं ठहरा। खाना खाया। वहां के इंतजाम से वह बहुत खुश हुआ। दरगाह के लिए उसने एक हजार दीनार दिये। यही

नहीं, दरगाह के साथ जो जमीन थी उसका लगान सात साल के लिए माफ कर दिया।

: ५ :

जो खलीफा इतना उदार, प्रेम करनेवाला और इंसाफ-पसंद था, वह हँसना भी खूब जानता था। सच तो यह है कि जो हँसना जानते हैं, उनका ही दिल बड़ा होता है। एक बार की बात है, खलीफा को कई दिन से नींद नहीं आ रही थी। बहुत बार ऐसा होता था। तब उसका मन बहलाने के लिए कहानी कहनेवाले आते थे। तरह-तरह की कहानियां सुनाते थे। उस दिन जब खलीफा ने कहा, "आज मुझे नींद नहीं आ रही है, मेरा दिल परेशान है," तो पास खड़ा हुआ मसरूर खिलखिलाकर हँस पड़ा। खलीफा को बहुत तैश आया, मेरी बात पर हँसता है! क्या दीवाना हो गया है? मसरूर ने कहा, "नहीं—नहीं, अमीरुल मोमनीन, ऐसा नहीं है। वह और ही बात है, जिसकी वजह से मैं अपनी हँसी नहीं रोक सका। कल मैंने नदी के किनारे एक आदमी को देखा था। वह लोगों को हँसा रहा था। उसको याद करके मुझे एकाएक हँसी आ गई। मैं माफी चाहता हूं।" खलीफा ने कहा, "अभी जाकर उस आदमी को यहां लाओ।" मसरूर तुरंत उस आदमी के पास गया। सब बातें उससे कहीं। वह खलीफा के पास जाने को तैयार होगया, लेकिन दर-

बार में पहुंचने से पहले मसरूर ने उस आदमी के साथ एक ठहराव किया। उसने कहा, "खलीफा तुमको जो इनाम दें उसका दो-तिहाई मुझे देना होगा। तुमको सिर्फ़ एक-तिहाई मिलेगा।" पहले तो उस आदमी ने आनाकानी की, लेकिन बाद में कुछ सोचकर उसने यह बात मान ली। दोनों खलीफा के सामने पहुंचे। खलीफा ने उस आदमी को चमड़े का एक बेग दिखाया और कहा, "अगर तुम मुझे हँसा नहीं सके तो तीन बार यह बेग मारूंगा।" वह आदमी डंडों से पिट चुका था। बेग से पिटने की बात को उसने बहुत मामूली समझा। इसलिए उसने खलीफा की बात मान ली। अब उसने तरह-तरह के लतीफे सुनाने शुरू किये। उसने ऐसी-ऐसी बातें कहीं कि जिनको सुनकर दीवाना आदमी भी हँसी न रोक सके, लेकिन खलीफा के चेहरे पर मुसकराहट तक नहीं आई। आखिर उस आदमी को हार माननी पड़ी। ठहराव के अनुसार खलीफा ने बेग उठाकर उसके मारा। लगते ही उस बेग में से एक आवाज निकली। बेग में छोटे-छोटे पत्थर भरे हुए थे। यह उनकी ही आवाज थी। उनके कारण उस आदमी के बहुत चोट लगी। जैसे ही खलीफा दूसरी बार मारने चला, उस आदमी ने हाथ जोड़कर कहा, "मेहरबानी करके अब आप बाकी दो बेग मसरूर के मारें।" खलीफा ने पूछा, "क्या मतलब ?"

उस आदमी ने सारी कहानी कह-सुनाई। बोला, "जो कुछ मुझे मिलता हो, उसका दो-तिहाई भाग मसरूर का होगा। इसलिए आप दो बेंग मसरूर को मारिए।"

खलीफा ने मसरूर को बुला भेजा और उसके बेंग मारना शुरू किया। एक ही बेंग खाकर मसरूर पुकार उठा, "अमीरुल-मोमनीन, मुझे तो एक-तिहाई काफी है। इस आदमी को ही दो-तिहाई दीजिए।" यह सुनकर खलीफा इतना हँसा, इतना हँसा कि बहुत देर तक सांस नहीं आई। बाद में उसने उन दोनों को बहुत-सा इनाम दिया।

खलीफा के दरबार में एक मसखरा भी रहता था। उसका नाम अबुनवास था। वह अपने चुटकलों और हाजिरजवाबी के लिए मशहूर था। उसे कड़ी-से-कड़ी सजा मिलती थी, लेकिन हाजिरजवाबी के कारण वह हर बार बच जाता था। अबुनवास ही क्यों, दूसरे लोग भी हाजिरजवाबी के कारण सजा पाने से बच जाया करते थे। सच तो यह है कि इसका कारण खलीफा का अपना दिल था। उसमें नेकी और भलमनसाहत कूट-कूटकर भरी हुई थी। एक बार एक अफसर ने बहुत बड़ा अपराध किया। खलीफा ने उसको मौत की सजा दी। अफसर रोने लगा। खलीफा ने पूछा, "क्यों, मरने से डर लगता है?" अफसर ने जवाब दिया, "नहीं हजूर, मैं मरने से नहीं डरता।

एक दिन सभीको मरना है।" खलीफा ने पूछा, "तो फिर किसलिए रोते हो ?" अफसर ने जवाब दिया, "अमीरुल मोमनीन, मेरे रोने का कारण यह है कि मैं तब मर रहा हूं जब आप मुझसे नाराज हैं। आप खुश होते तो मैं खुशी से मरता।" यह सुनकर खलीफा को हँसी आगई और उसने उस अफसर को माफ कर दिया।

इसी तरह एक बार खलीफा ने एक गवैये के गाने की बहुत तारीफ की। उसे बहुत-सा धन देने की आज्ञा दी। गवैये ने कहा, "अमीरुल मोमनीन, आपने मेरी तारीफ में जो कुछ कहा है, वह मेरे राग से बहुत ही ऊंचा है। फिर आप मुझे इनाम किसलिए दे रहे हैं ?" यह सुनकर खलीफा ने उसको और भी इनाम दिया।

: ६ :

ये छोटी-छोटी घटनाएँ बताती हैं कि खलीफा कितना उदार था। राजनीति के कारण उसने बहुत-सी लड़ाइयां लड़ीं। बहुत-से लोगों को मरवाया। वह बहुत शान से रहता था। लेकिन यह सबकुछ होते हुए भी वह एक भला आदमी था। उसके समय में मुसलमानों की हुकूमत बहुत ऊंचे दर्जे तक पहुंच गई थी। चारों ओर खुशहाली थी, अमन था। लेकिन उसके बाद ही हालत गिरने लगी। अपने आखिरी दिनों से खलीफा को मालूम हो गया था कि उसके

बाद उसके बेटे आपस में लड़ेंगे। यह हुकूमत बरबाद हो जायगी। यह सब सोचकर वह बहुत परेशान होता था। वह बेटों को जानता था। इसलिए उसने बारबार यही कोशिश की कि बेटे आपस में मेल-मिलाप से रहें। वह उनको मक्का-शरीफ ले गया। उनसे वचन लिया कि वे कभी न लड़ेंगे।

उसकी कई बेगमें थीं। उनमें सबसे बड़ी जुबेदा थी। वह अरब-जाति की थी। उसका लड़का अमीन था। एक रानी ईरानी थी। उसका बेटा मामूं था। मामूं चतुर, उदार और सब तरह से लायक था। उसमें राजा के सभी गुण थे। अमीन शौकीन था, उसका दिल छोटा था। वह औरतों के कहने में था, लेकिन जाँनशीन (युवराज) वही बनाया गया। वह अरब-मां का बेटा था। उन दिनों अरबों का जोर था। खलीफा मामूं को चाहता था, पर बेबस था। एक दिन वह बहुत बेचैन था। कभी पलंग पर लेट जाता, कभी घूमने लगता। बार-बार धीरे-धीरे एक शेर पढ़ता, जिसका मतलब था कि राज उसे ही करने दो, जो सोच-समझकर काम करनेवाला हो, गहरा हो, जिसका दिल बड़ा हो, खरा हो। उसे राजा न बनाओ जो बेवकूफ हो, तुनक-मिजाज हो, छोटे दिल का हो। उसपर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता।

आखिर उसने राज का बंटवारा कर दिया। उसके

बाद भी जुबेदा ने शिकायत की, "आपने मामूं को सेना के लिए बहुत धन दिया है।"

खलीफा ने लाल-पीले होकर जवाब दिया, "मेरे कामों की छानबीन करनेवाली तुम कौन होती हो ? तुम्हारे बेटे को जो देश मिला है, उसमें सदा अमन रहता है। मामूं को जो सूबे मिले हैं, उनमें हमेशा झगड़े होते रहते हैं। इसलिए उसे रुपये और फौज की ज्यादा जरूरत है। मामूं से तुम्हारे बेटे को कोई डर नहीं है। तुम्हारा बेटा ही मामूं को परेशान करेगा।"

यही हुआ। अमीन ने खलीफा बनते ही मामूं से झगड़ा किया। यह दूसरी बात है कि मामूं की जीत हुई। हारूं-अल-रशीद के बाद मामूं-अल-रशीद ही ऐसा खलीफा हुआ, जिसका नाम इतिहास में रोशन है।

खलीफा के आखिरी दिन बुरी तरह बीते। आनेवाले जमाने की बात सोच-सोचकर वह बहुत बेचैन होता था। लेकिन फिर भी उसने किसी काम में ढील नहीं आने दी। सेहत खराब थी, फिर भी बगावत दबाने के लिए वह खुरासान की तरफ चल पड़ा। सेना में गड़बड़ी न हो, इसलिए उसने अपना रोग छिपाने की कोशिश की। लेकिन कबतक ? आखिर एक दिन उससे घोड़े पर भी नहीं चढ़ा गया। अब तो उसे मालूम होगया कि मौत सर पर मंडरा रही है। उसने अपनी कबर खुदवाई और उसके किनारे पलंग बिछाकर लेट

गया। वह बार बार बेहोश हो जाता था। एक बार होश आ जाने पर उसने वज़ीरे-आज़म से कहा, "फजल, क्या वह वक्त आगया है, जिसका मुझे डर था? जो लोग हमसे हसद करते थे वे अब रहम की नजरों से हमें देख रहे हैं। सबको सबर करना चाहिए। जो होना है, वह होकर रहेगा। मुझे वह साथी याद आ रहे हैं, जिनको मैं प्यार करता था।"

फिर उसने एक मोटा कंबल मांगा। उसे ओढ़ा और खिदमतगार का सहारा लेकर बैठ गया। उसे बड़ी पीड़ा हो रही थी। मालिक की यह हालत देखकर खिदमतगार बहुत दुखी हुआ। उसने कहा, "मैं आराम से बैठा हूं और आपको इतनी तकलीफ हो रही है!"

यह सुनकर खलीफा ने कहकहा लगाया और एक शेर पढ़ा। उसका मतलब था—मैं एक बहादुर जाति का लाल हूं। मैं तकलीफ़ को सहना जानता हूं।

खलीफा की यह आखिरी कोशिश थी। उसके कुछ देर बाद ही उसने आखिरी सांस ली। दीपक बुझ गया। इस तरह एक महान खलीफा, एक उदार, नेक और समझदार शासक, कला और साहित्य का प्रेमी, जनता को प्यार करनेवाला, एक खुशदिल इंसान दुनिया से उठ गया। उसके समय में बगदाद दुनिया भर में मशहूर होगया था। सारी दुनिया के लोग उस खूबसूरत शहर को देखने आते थे। सौदागर तो आते

ही थे, पंडित और कालकार खास तौर से आते थे। खलीफा उनका आदर जो करता था।

इन सब बातों के लिए यह इतिहास में मशहूर है। सबसे बढ़कर मशहूर है रात में घूमने के लिए।

रात को घूमते हुए एक बार उसने एक अंधे भिखारी को देखा और उसे एक अशरफी दी। भिखारी ने हाथ पकड़ लिया और कहा, "जिस तरह आपने मुझे अशरफी दी, उसी तरह मेरे सिर पर एक धौल लगा दीजिए। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते तो अपनी अशरफी वापस ले जाइए।" खलीफा बड़ा हैरान हुआ। उसे धौल लगानी पड़ी, पर अगले दिन उसने भिखारी को अपने दरबार में बुला भेजा। वह उसकी कहानी सुनना चाहता था।

भिखारी ने कहा, "मैं पहले बहुत धनी आदमी था। बाद में बुरी संगत में पड़कर मैंने सब पैसा खो दिया। तब मेरी आंखें खुलीं। किसी तरह मैंने अस्सी ऊंट इकट्ठे किये। उनको किराये पर चलाकर मैं अपना गुजारा करने लगा। एक बार मेरा एक फकीर से मिलना हुआ। फकीर ने बताया कि पास ही एक बड़ा खजाना गड़ा हुआ है। यह सुनकर मैं बहुत खुश हुआ। हम दोनों ने आधा-आधा खजाना बांट लेना तय किया। फकीर मुझको उस जगह ले गया, जहां खजाना गड़ा हुआ था। रास्ता तंग था और जगह सुनसान, वीरान।

डर लगता था। फकीर ने वहां आग जलाई, फिर कुछ मंत्र पढ़े। देखते-देखते धुआं फैल गया। जब वह हटा तो एक रास्ता नजर आने लगा।...

फकीर की बात सच थी। वहां बहुत बड़ा खजाना गड़ा हुआ था। उसे हमने ऊंटों पर लादा। फिर दोनों ने चालीस-चालीस ऊंट बांट लिये और लौट पड़े। रास्ते में मेरे मन में लालच पैदा हुआ--'फकीर उस धन को लेकर क्या करेगा ? इतना धन पास रखकर वह खुदा का नाम भी नहीं ले सकेगा।' यह सोचकर मैंने फकीर से धीरे-धीरे सब ऊँट ले लिये। उस धन के साथ उस फकीर को एक डिबिया भी मिली थी। मैंने वह डिबिया भी उससे मांगी। फकीर ने मना किया। इस पर मुझे तैश आ गया। मैं लड़ने लगा। यह देखकर फकीर ने डिबिया भी मुझे दे दी और बताया, "इसमें एक लेप है। इसे बाईं आंख पर लगाने से जहां कहीं भी खजाना गड़ा हुआ है, दिखाई देने लगेगा। दाहिनी आंख पर लगाओगे तो अंधे हो जाओगे।"

मैंने बाईं आंख पर लेप किया तो साधू की बात सच निकली। मैंने सोचा--यदि एक आंख पर लगाने से इतना लाभ है तो जरूर दाहिनी आंख पर लगाने से और भी अधिक लाभ होगा। फकीर मुझे बता नहीं रहा है। इसलिए फकीर के बहुत मना करने पर भी मैंने दाहिनी आंख पर भी लेप लगा लिया। लेप का लगाना

था कि मैं अंधा होगया। बस अब तो फकीर की बन आई। सब धन लेकर वह वहां से चला गया। मैंने

वह डिबिया भी मुझे दे दी।

अपने किये का फल पाया। मैं किसी तरह यहां पहुंचा और भीख मांगने लगा। मैंने यह भी तय कर लिया कि जो मुझे दान देगा, उस से अपने सिर पर धौल भी लगवाया करूंगा। यही मेरे भी पाप का दंड है।"

खलीफा ने यह कहानी सुनी तो उसका दिल भर आया। उसने कहा, "अब तुम भीख मत मांगा करो। मैं चार रुपये रोज तुमको दूंगा। तुम अल्लाताला से अपने कसूर के लिए माफी मांगा करो।"

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोवा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारू-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

६१

छः आना